संसाधन सहभागिता (Resource sharing)

वर्तमान समय में प्रत्येक क्षेत्र मे सहभागिता देखने को मिलती है और मानव से संबन्धित शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र हो जहां सहभागिता नहीं देखने को मिले। आज व्यापार से लेकर पारिवारिक समारोहों मे भी सहभागिता देखने को मिलती है। वर्तमान समय में प्रत्येक क्षेत्र की तरह पुस्तकालयों में भी सहभागिता देखने को मिलती है, पुस्तकालयों द्वारा भी अनेक तरह के कार्यों को सहभागिता के माध्यम से किया जाता है।

दरअसल इस प्रतियोगिता के युग में कोई भी पुस्तकालय पूर्ण नहीं हो सकता और दे सहभागिता के माध्यम से ही पाठकों को बेहतर सेवा प्रदान कर सकते है

पहले संसाधनों सहभागिता का नाम पुस्तकालय सहयोग (Library Cooperation) था। संसाधन सहभागिता का प्रारंभ 200 ई. पू. में एलेक्जेंडरिया (Alexandria Library) तथा पर्गमन ग्रंथालय (Pergamun Library) के बिच सहयोग से हुआ और उस समय यह पुस्तकालय सहयोग के नाम से जाना जाता था। बाद मे इसका नाम संसाधन सहभागिता हो गया।

प्राय: देखा गया है की ग्रंथालयो में विभिन्न प्रकार की समस्याओ के कारण पाठकों को अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है इसके अलावा पुस्तकालयों का बजट भी उतना नहीं है कि समस्त प्रकार के पुस्तकों का क्रय कर सके। इसके अलावा पुस्तकालयों को कुशल कर्मचारियों तथा तकनीकों के अभाव का भी सामना करना पड़ता है। अत: संसाधन सहभागिता (Resource sharing) द्वारा ग्रंथालय द्वारा अधिक गतिशील तथा आधुनिक सेवा प्रदत्त किया जा सकता है। संसाधन सहभागिता का प्रारंभ २०० ई. पू. में एलेक्जेंडरिया (Alexandria Library) तथा पर्गमन ग्रंथालय (Pergamum Library) के बिच सहयोग से हुआ। 1970 में कुछ विश्वविद्यालयो के बीच संसाधन सहभागिता को आवश्यक समझा गया। यही करण था की 'वीमर एवं जीन' ग्रंथालयो ने संयुक्त रूप से एक संघीय सूची (Union Catalogue), एच. सी. बैटन (H. C. Batton) के द्वारा तैयार की गयी। इस प्रकार ग्रंथालयो के बिच संसाधन सहभागिता का विकास हुआ। इसके अलावा 1971 में UNISIST के एक प्रयोग के अंतर्गत ग्रंथालयो के बीच सहयोग स्थापित करने के लिए सहायता प्रदान की गयी।

पुस्तकालय नेटवर्क

पुस्तकालय नेटवर्क संसाधन सहभागिता का एक प्रमुख माध्यम है। पुस्तकालय नेटवर्क, कम्प्यूटर के माध्यम से दो या दो से अधिक परस्पर जुडे हुए पुस्तकालय को कहते हैं। ये पुस्तकालय आपस में इलेक्ट्रोनिक सूचना का आदान-प्रदान करते हैं, और आपस में जुडे रहते हैं। भारत सरकार ने वैज्ञानिक नीति का निर्माण किया तथा 1983 में प्रौद्योगिकी नीति में सूचना के आदान-प्रदान पर ज्यादा बल दिया गया। 1986 ई० में NAPLIS (National policy on library and information system) रिपोर्ट पेश किया गया। इसमें सूचना एवं पुस्तकालय नेटवर्क बनाने पर जो दिया गया।

1988 में Indian International centre द्वारा नई दिल्ली में संसाधन सहभागिता तथा नेटवर्किंग पर एक सम्मलेन का आयोजन किया गया। इसी के परिणाम स्वरूप प्रथम पुस्तकालय नेटवर्क DELNET स्थापना हुई।

पुस्तकालय संसाधन सहभागिता एवं नेटवर्क की आवश्यकता एवं उद्देश्य

इसकी आवश्यकता और उद्देश्य निम्नलिखित है:-

1. भारत के सभी कॉलेज, विश्वविद्यालय के पुस्तकालयों को आपस में जोड़कर सूचना सेवा की क्षमता में वृद्धि करना।

2. शोध तथा अनुसंधान में सूचना सेवा की वृद्धि करना।

3 On-line computer सेवा तथा पत्र-पत्रिकाओं और पुस्तक सहयोग एवं संघीय सूचीकरण करके सभी पुस्तकालयों को सहयोग प्रदान करना।

4. संघीय सूचीकरण का निर्माण करना।

5. छोटे-पुस्तकालयों का भला करना।

6. इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से प्रलेख वितरण सेवा प्रदान करना।

7. पुस्तकालय में प्रलेख आदान-प्रदान द्वारा संग्रह में वृद्धि करना।

संसाधन सहभागिता के द्वारा निम्न सेवाए प्रदान की जाती है:-

1. अंतर-ग्रंथालय ऋण सेवा (Inter-library loan service)

2. उपभोक्ता ई-मेल (उपयोगकर्ता ई-मेल)

3. अधिग्रहण एवं सूचीकरण (Acquisition and Cataloguing)

4. कर्मचारी प्रबंध (Personnel Management-training)

5. सुचना सेवा (Information service)

6. अनुवाद सेवा (Translation Services)

7. विशिष्ट संग्रह का विकास (Development of Special collection)

8. सहकारी संग्रहण (Co-operative Storage)

स्रोतः-

पुस्तकालयों द्वारा लगभग सभी क्षेत्रों में संसाधन सहभागिता की जाती है। इनमे प्रमुख क्षेत्र है:-

1) पाठ्य सामग्री के क्षेत्रों में संसाधन सहभागिताः पुस्तकालयों द्वारा पाठ्य सामग्री के क्षेत्रों में संसाधन सहभागिता काफी महत्वपूर्ण है। इसके द्वारा पाठ्य समग्रियों का आदान-प्रदान और सहयोग किया जाता है।इसमे अंतर ग्रंथालय ऋण भी प्रमुख होते है।

2) मानव संसाधन /कर्मचारियों के क्षेत्रों में संसाधन सहभागिताः पुस्तकालयों द्वारा मानव संसाधन/कर्मचारियों के क्षेत्रों में संसाधन सहभागिता काफी महत्वपूर्ण है। इसके द्वारा कर्मचारियों का आदान-प्रदान और सहयोग किया जाता है।

3) तकनीकों के क्षेत्रों में संसाधन सहभागिताः पुस्तकालयों द्वारा तकनीकों के क्षेत्रों में संसाधन सहभागिता

3) तकनीकों के क्षेत्रों में संसाधन सहभागिताः पुस्तकालयों द्वारा तकनीकों के क्षेत्रों में संसाधन सहभागिता काफी महत्वपूर्ण है। इसके द्वारा तकनीकों का आदान-प्रदान और सहयोग किया जाता है। जैसे पुस्तकालय सॉफ्टवेयर आदि तकनीक।

2) अन्य क्षेत्रों में संसाधन सहभागिताः पुस्तकालयों द्वारा अन्य क्षेत्रों में संसाधन सहभागिता भी की जाती है। इसके अंतर्गत सेमीनार, सम्मेलनों का आयोजन, consortia का विकास आदि महत्वपूर्ण बातें है।

भारत में प्रमुख Library Network:

1. डेवलपिंग लाइब्रेरी नेटवर्क (DELNET): डेवलपिंग लाइब्रेरी नेटवर्क इसकी स्थापना 1988 ई० में दिल्ली में की गई थी। इसकी स्थापना में NISSAT द्वारा प्रमुख योगदान दिया गया था।

2. कलकत्ता लाइब्रेरी नेटवर्क (CALIBNET): कलकत्ता लाइब्रेरी नेटवर्क इसकी स्थापना 1986 ई० में कलकत्ता में की गई थी। इसकी स्थापना में भी NISSAT द्वारा प्रमुख योगदान दिया गया था।

3. SIRNET: वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी सूचना परिषद ने केन्द्रों को नेटवर्क से जोड़कर SIRNET का निर्माण किया।

4. INDONET: यह नेटवर्क भारत का कम्प्यूटर आधारित नेटवर्क है, इसकी स्थापना हैदराबाद में की गई थी।

5. ERNET: इसकी स्थापना 1977 में NIC- National informatics centre द्वारा की गई थी।

6. INFLIBNET: INFIBNET भारत के प्रमुख और विशाल नेटवर्क है। इस पंचवर्षीय परियोजना को आठवीं पंचवर्षीय योजना के अंतर्ग कार्यान्वित किया गया था। इसका प्रारूप 1988 ई० में U.G.C द्वारा तैयार किया गया था। इस नेटवर्क को कार्यान्वित करने का श्रेय U.G.C. को जाता है।

निष्कर्ष: इस प्रकार हम देखते है कि भारत में पुस्तकालय का विकास उस गति से नहीं हुआ है जितना की होना चाहिए। भारत में पुस्तकालय के विकास के लिए और प्रयास की आवश्यकता है। भारत में राष्ट्रीय स्तर पर पुस्तकालय नेटवर्क और संसाधनों की सहभागिता की आवश्यकता है। पुस्तकालयों द्वारा अनेक तरह के कार्यों को सहभागिता के माध्यम से किया जाता है। दरअसल इस प्रतियोगिता के युग में कई भी पुस्तकालय पूर्ण नहीं हो सकता और वे अपने मौजूद संसाधनों की सहभागिता के माध्यम से ही पाठकों को बेहतर सेवा प्रदान कर सकते है।

Manisha